

महाविद्यालय का संक्षिप्त परिचय

भाऊ साहेब भुस्कुटे शासकीय महाविद्यालय की स्थापना वर्ष 1983 में हुई। नर्मदा नदी की पावन गोद और सतपुड़ा की सुरम्य पर्वत-श्रृंखलाओं के सान्निध्य में स्थित यह महाविद्यालय प्राकृतिक सौंदर्य, सांस्कृतिक वैभव और शैक्षणिक चेतना का अद्भुत संगम प्रस्तुत करता है। कृषि-प्रधान हरदा जिले का यह अंचल अपने सहज, सरल और समृद्ध लोकजीवन के लिए विशिष्ट पहचान रखता है। क्षेत्र के मध्य से प्रवाहित होती गंजाल नदी इस भू-भाग की प्राकृतिक आभा में और अधिक रमणीयता का संचार करती है। महाविद्यालय का भौगोलिक परिवेश जितना मनोहारी है, उसका सांस्कृतिक परिवेश भी उतना ही समृद्ध और विविधवर्णी है।

इस क्षेत्र की ऐतिहासिक, धार्मिक और प्राकृतिक विरासत अनेक दर्शनीय स्थलों के रूप में आज भी अपनी गौरवगाथा कहती है। गोमुख मठ-भादूगाँव, मुर्गी घाटी-रहटगाँव, कान्हा बाबा की समाधि-सोडलपुर तथा गोराखाल जलप्रपात जैसे स्थल इस अंचल की आध्यात्मिक आस्था, ऐतिहासिक चेतना और प्राकृतिक संपदा के जीवंत प्रतीक हैं। इन स्थलों की उपस्थिति महाविद्यालय के परिवेश को विशिष्ट सांस्कृतिक गरिमा प्रदान करती है।

शैक्षणिक क्षेत्र में भी महाविद्यालय ने स्थापना काल से निरंतर प्रगति और विस्तार की यात्रा तय की है। वर्तमान में यहाँ तीन परंपरागत स्नातक पाठ्यक्रम संचालित हैं तथा नौ स्ववित्तीय पाठ्यक्रम विद्यार्थियों को शिक्षा के विविध अवसर प्रदान कर रहे हैं। इनमें पाँच स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम उच्च शिक्षा के क्षेत्र में विद्यार्थियों के लिए ज्ञान के नए क्षितिज उद्घाटित कर रहे हैं। वर्तमान में लगभग 2100 विद्यार्थी महाविद्यालय में अध्ययनरत हैं। यह विशाल विद्यार्थी समुदाय महाविद्यालय की जीवंत शैक्षणिक चेतना और निरंतर विकसित होते स्वरूप का परिचायक है।

महाविद्यालय में शिक्षा को केवल पुस्तकीय ज्ञान तक सीमित न रखते हुए विद्यार्थियों के व्यक्तित्व के सर्वांगीण विकास पर विशेष बल दिया जाता है। इस उद्देश्य से राष्ट्रीय सेवा योजना (NSS) तथा राष्ट्रीय कैडेट कोर (NCC) की इकाइयाँ सक्रिय रूप से कार्यरत हैं। इनके माध्यम से विद्यार्थियों में सेवा, अनुशासन, नेतृत्व, सामाजिक उत्तरदायित्व और राष्ट्रभावना जैसे जीवन-मूल्यों का विकास किया जाता है। साथ ही, मध्यप्रदेश शासन एवं उच्च शिक्षा विभाग द्वारा संचालित विभिन्न योजनाओं का लाभ भी विद्यार्थियों को समय-समय पर उपलब्ध कराया जाता है।

भाऊ साहेब भुस्कुटे शासकीय महाविद्यालय इस प्रकार केवल ज्ञानार्जन और उपाधि प्रदान करने वाली संस्था मात्र नहीं है, बल्कि यह क्षेत्र की सामाजिक चेतना, सांस्कृतिक परंपराओं और राष्ट्रीय मूल्यों के संरक्षण एवं संवर्धन का सशक्त केंद्र भी है। प्राकृतिक सौंदर्य की गोद में विकसित यह महाविद्यालय शिक्षा, संस्कार और सामाजिक प्रतिबद्धता की त्रिवेणी के रूप में विद्यार्थियों के उज्ज्वल भविष्य का निर्माण करते हुए क्षेत्र की प्रगति में निरंतर अपना योगदान दे रहा है।

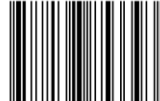


Sadbhavana Publication

Email-sadbhavanapublication@gmail.com

website-www.sadbhavanapublication.com

ISBN 978-81-688533-9-3



9 788168 853393



अकादमिक जगत में पाँडकास्टिंग और ऑडियो स्टोरीटेलिंग: शिक्षण, शोध एवं ज्ञान प्रसार के नवीन आयाम

— अकादमिक जगत में —

पाँडकास्टिंग और ऑडियो स्टोरीटेलिंग:

शिक्षण, शोध एवं ज्ञान प्रसार के नवीन आयाम



सम्पादक

डॉ. संजय कुमार पटवा

सह-सम्पादक

सुश्री मीनाक्षी यादव
डॉ. सुनित काशिव

अकादमिक जगत में पॉडकास्टिंग और ऑडियो
स्टोरीटेलिंग: शिक्षण, शोध एवं ज्ञान प्रसार के
नवीन आयाम

संरक्षक

डॉ. जे. के. जैन
प्राचार्य

सम्पादक

डॉ. संजय कुमार पटवा
सहायक प्राध्यापक, अर्थशास्त्र

सह – सम्पादक

सुश्री मीनाक्षी यादव
सहायक प्राध्यापक, अंग्रेजी
डॉ. सुनित काशिव
अतिथि विद्वान, राजनीति विज्ञान विभाग

भाऊ साहेब भुस्कुटे
शासकीय महाविद्यालय टिमरनी जिला-हरदा (म.प्र.)



Sadbhawana Publication

अकादमिक जगत में पॉडकास्टिंग और ऑडियो स्टोरीटेलिंग:

शिक्षण, शोध एवं ज्ञान प्रसार के नवीन आयाम

संपादक: डॉ. संजय कुमार पटवा

सह- सम्पादक: सुश्री मीनाक्षी यादव, डॉ. सुनित काशिव

Copyright © With The Respective Authors

First Edition: August 2026

ISBN: 978-81-688533-9-3

Published By:

Sadbhawana Publication

Near Rajeev Gandhi School Ambah

Distt Morena (M.P.) - 476111

Contact 7987484155

Email-sadbhawanapublication@gmail.com

website-www.sadbhawanapublication.com

Printed At :

Kensington Printing and Packaging

Noida -201301

Cover By : Krishna Sharma

Book Design & Layout By : Deepti Gupta

Price: ₹ 400

No part of this publication may be reproduced, stored in a retrieval system, or transmitted in any form or by any means, whether electronic, mechanical, photocopying, recording, or otherwise, without the prior written permission of both the author and the publisher. The views and opinions expressed in this book are solely those of the author and do not necessarily reflect the views or policies of the editor, publisher, or printer. The author is solely responsible for the originality, accuracy, authenticity, and legality of the contents of this publication. Any claims, disputes, legal proceedings, or liabilities arising from the contents of this book shall be the sole responsibility of the author. The editor, publisher, and printer shall not be held liable for any such claims or consequences. All disputes arising out of or in connection with this publication shall be subject to the exclusive jurisdiction of the competent courts at Ambah, District Morena, Madhya Pradesh, India.

अकादमिक जगत में पॉडकास्टिंग और ऑडियो
स्टोरीटेलिंग:
शिक्षण, शोध एवं ज्ञान प्रसार के नवीन आयाम

राष्ट्रीय शोध संगोष्ठी
दिनांक - 11 अगस्त

// प्रायोजक //



प्रधानमंत्री उच्चतर शिक्षा अभियान (PM USHA)
द्वारा:- CRISP (क्रिस्प) भोपाल (म.प्र.)

// आयोजक //



भाऊ साहेब भुस्कूटे
शासकीय महाविद्यालय, टिमरनी जिला- हरदा (म.प्र.)

वनस्पति एवं औषधियों के भारतीय ज्ञान को ऑडियो पॉडकास्टिंग एवं स्टोरी टेलिंग द्वारा शोध एवं शिक्षा हेतु संग्रहित करना

डॉ. आशीष सिंह तोमर

सहायक प्राध्यापक वनस्पति शास्त्र

पी. एम. कॉलेज ऑफ एक्सीलेंस

शासकीय नर्मदा स्नातकोत्तर महाविद्यालय, नर्मदापुरम

भारतीय ग्रन्थ, वेदों, पुराणों में भारतीय संस्कृति में वनस्पतियों को पूजा जाता है। ईश्वरी आराधना में इनका प्रयोग किया जाता है। भारत आयुर्वेद का जनक है। हमारे ऋषि मुनि दार्शनिक एवं ज्ञानीजन ने वनस्पतियों का वर्गीकरण, एवं इनका औषधियों में प्रयोग एवं कृषि में उपयोगित पौधों की जानकारी एवं उनका संरक्षण का वर्णन किया है। भारत में वैध एवं नाड़ी वैध द्वारा जड़ीबूटियां एवं वनस्पतियों का उपयोग असाध्य रोगों को ठीक करने हेतु किया जाता था। भारत में ग्रामीण क्षेत्रों में औषधियों के जानकार रहे हैं किंतु इनका ज्ञान अगली पीढ़ी को स्थानांतरित नहीं हो पाया जो वर्तमान में मानव के लिए अतिलाभकारी है। ग्रामीण क्षेत्रों में जो वनस्पति का ज्ञान अभी है। उसे भी सहजा नहीं जा पा रहा है।

भारतीय लोकोक्तियों में लोकगीतों में वनस्पतियों का आयुर्वेद में उपयोग एवं वनस्पतियों का जीवन शैली में प्रतिदिन उपयोग का वर्णन है परन्तु उस ज्ञान को संग्रहित नहीं किया जा पा रहा है। वनस्पतियों एवं औषधियों का ज्ञान संग्रहित करने हेतु स्टोरी टेलिंग को रिकॉर्ड करने एवं पॉडकास्टिंग द्वारा विद्यार्थियों द्वारा शोध एवं शिक्षा में प्रयोग किया जाना चाहिए। संस्कृत के ज्ञाता द्वारा वेदों, उपनिषदों, रामायण, पुराणों के अध्ययन द्वारा वनस्पतियों का ज्ञान को पॉडकास्ट द्वारा विद्यार्थियों के लिए एवं शोध के लिए लाभकारी बनाया जा सकता है। पराशर, चरक, सुश्रुत, सुर्पाल, और कौटिल्य द्वारा रचित ग्रंथों और संहिता को विद्वानों द्वारा पॉडकास्ट करवाकर ज्ञान को संग्रहित किया जाना चाहिए।

भारतीय पारंपरिक भोजन में खाद्य प्रदार्थों की विविधता के ज्ञान को एवं भारतीय लोक चिकित्सा में उपयोग किए जाने वाले वनस्पतियों जिनका ज्ञान घर में दादी, दादा एवं बुजुर्गों को है। उस ज्ञान को पॉडकास्ट एवं स्टोरी टेलिंग द्वारा जन जन तक पहुंचाया जा सकता है। स्टोरी टेलिंग भारतीयों में एक सामान्य परंपरा है इससे भारतीय वनस्पतियों का ज्ञान एवं आयुर्वेद चिकित्सा का पीढ़ी दर पीढ़ी प्रचार हो रहा है। पॉडकास्ट एवं स्टोरी टेलिंग को ऑडियो एवं वीडियो माध्यम से नेट के माध्यम से यूट्यूब, इंस्टाग्राम, वाट्सअप, फेसबुक, टेलीग्राम, अराताई एवं अन्य सोशल मीडिया के माध्यम से जन जन तक पहुंचाया जा सकता है इसे आसानी से सुना एवं देखा जा सकता है। भारतीय ज्ञान परंपरा में वर्णित वनस्पतियों, औषधियों, के ज्ञान को जन लाभ हेतु पॉडकास्ट एवं स्टोरी टेलिंग के माध्यम से वनस्पतियों, औषधियों का संरक्षण एवं जनकल्याण हेतु उपयोग किया जा सकता है।